# Creative writing
# Computation

Scanned by CamScanner

"ज्ञान, विज्ञान, सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार"

-शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षा संस्था संचलित

# विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

## हिंदी विभाग

## शैक्षिक वर्ष 2021-2022

दि. 30/03/2022

## *सृजनात्मक लेखन/रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता*

सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि महाविद्यालय के हिंदी विभाग की ओर से सृजनात्मक लेखन/रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता में कविता, गजल, कहानी, निबंध, साक्षात्कार, यात्रा-वर्णन, आत्मकथा अंश, पुस्तक समीक्षा, ललित लेख, शोध आलेख, जानकारीपरक आलेख, ऐतिहासिक आलेख, रेखाचित्र, वैचारिक लेख, ललित लेख, चिंतनपरक आलेख, व्यक्ति चित्र, एकांकी, नाटक, वैज्ञानिक लेखन आदि साहित्य विधाओं में लेखन करने का सुनहरा अवसर हिंदी विभाग की ओर से मुहैया किया जा रहा है। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय क्रमांक प्राप्त छात्रों को प्रमाणपत्र समेत पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। 20/04/ 2022 तक आप अपनी मौलिक रचना हमारे वाट्स एप ग्रुप पर भेज सकते हैं। परीक्षक का निर्णय अंतिम रहेगा।

*लेखन हिंदी भाषा में ही होना चाहिए*

- लेखन साहित्य निम्नलिखित ई-मेल पर ही भेजें
- drdipaktupe2016@gmail.com, dipaktupe1980@gmail.com
- पंजीकरण लिंक: https://forms.gle/464bA4YFy2m1nTwc6
- रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए वाट्स एप ग्रुप लिंक से जुडना अनिवार्य है। वाट्स एप ग्रुप लिंक: https://chat.whatsapp.com/L6uCmgwbWJI6NVCjQ2MqzG

डॉ. दीपक तुपे
हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

डॉ. आरिफ महात
हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

विवेकानंद कॉलेज
कोल्हापूर.

Scanned by CamScanner

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार"

- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापुजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर संचलित

# विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

## हिंदी विभाग

### शैक्षिक वर्ष 2021–2022

दि. 20 / 04 / 2022

### सृजनात्मक लेखन / रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता – उपस्थिति पत्र

| अनु. क्र. | छात्र का नाम | कक्षा | विषय | लेखन प्रकार | हस्ताक्षर |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | कु साक्षी दुबे | बी.ए. भाग 1 | तुम्हारा बन जाऊँ | कविता | |
| 2. | कुणाल चौगुले | बी. कॉम. भाग 3 | जिंदगी | कविता | |
| 3. | ऋतुजा व्हरांबळे | बी. ए. भाग 1 | संघर्ष पथ | कविता | |
| 4. | पूजा पोपले | बी. ए. भाग 1 | मेरी सहेली, मेरी बहन | कविता | |
| 5. | सुयश झुणके | बी. एस्सी. भाग 2 | किताब | कविता | |
| 6. | चेतना रानगी | बी. कॉम. भाग 1 | हिंदी की आत्मकथा | कविता | |
| 7. | श्रीनिवास काटकर | बी. बी. ए. भाग 1 | माँ | कविता | |
| 8. | राहुल नाईक | बी.ए. भाग 1 | हिंदी है हमारी | कविता | |
| 9. | ऋतुजा पाटोळे | बी. ए. भाग 3 | स्वरामोल | कहानी | |
| 10. | वर्षा गायकवाड | बी. ए. भाग 3 | इन्सानियत | कहानी | |
| 11. | नेहा तुरुके | बी. बी. ए. भाग 1 | कोरोना और हम | जानकारीपरक आलेख | |
| 12. | श्रीनिवास काटकर | बी. बी. ए. भाग 1 | गरीब की राखी | हास्य–व्यंग्य | |
| 13. | करिना इंडिकर | बी. ए. भाग 2 | कानून की सच्ची जानकारः कपिला हिंगोरानी | वैचारिक आलेख | |
| 14. | श्रीनिवास काटकर | बी. बी. ए. भाग 1 | कुलदीपक | एकांकी | |
| 15. | वैष्णवी ठाकरे | बी. एस्सी. भाग 2 | अबला नहीं, सबला है नारी | वैचारिक आलेख | |
| 16. | ऋतुजा आवटे | बी.ए. भाग 3 | शौक से नहीं, मजबूरी से करते हैं बाल मजदूरी | जानकारीपरक आलेख | |
| 17. | सहिल खरारे | बी.ए. भाग 1 | हॉकी के जादूगर | जानकारीपरक आलेख | SK |
| 18. | प्रणव पाटिल | बी.ए. भाग 1 | मैं हूँ भाषा | वैचारिक निबंध | |
| 19. | अर्पिता पाटिल | बी.ए. भाग 3 | अनाथों की माँ–सिंधूताई सपकाळ | चरित्रप्रधान लेख | |
| 20. | राहुल नाईक | बी.ए. भाग1 | अगर गांधीजी आ जाए | हास्य–व्यंग्य | |

डॉ. दीपक तुपे

डॉ. आरिफ महात
**विभागाध्यक्ष,**
**हिंदी विभाग, विवेकानंद कॉलेज,**
**कोल्हापूर.**

Scanned by CamScanner

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार"
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर संचलित

# विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

## हिंदी विभाग

### शैक्षिक वर्ष 2021–2022

दि. 20/04/2022

**प्रतियोगिता का नामः सृजनात्मक/रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता का नतीजा**

महाविद्यालय के हिंदी विभाग की ओर से दि. दि. 20/04/2022 को आयोजित सृजनात्मक/रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता की अंकतालिका।

| अनु. क्र. | प्रतिभागी का नाम | कक्षा | भाषा प्रभुत्व 03 | प्रस्तुति 03 | विषय ज्ञान 04 | कुल अंक 10 | क्रमांक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | कु. वर्षा गायकवाड | बी. ए. भाग 3 | 03 | 03 | 04 | 10 | प्रथम |
| 2. | कु. अर्पिता पाटिल | बी. ए. भाग 3 | 02 | 03 | 04 | 09 | दवितीय |
| 3. | कु. चेतना रानगी | बी. कॉम. भाग 1 | 02 | 03 | 03 | 08 | तृतीय |
| 4. | कु. करिना इंडिकर | बी. ए. भाग 2 | 02 | 02 | 03 | 07 | उत्तेजनार्थ |
| 5. | कु. श्रीनिवास काटकर | बी. बी. ए. भाग 1 | 02 | 02 | 03 | 07 | उत्तेजनार्थ |

डॉ. दीपक तुपे

डॉ. आरिफ महात
**विभागाध्यक्ष,**
**हिंदी बिभाग, विवेकानंद कॉलेज,**
**कोल्हापूर.**

Scanned by CamScanner

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार"

- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापुजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर संचलित

# विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

## हिंदी विभाग

## शैक्षिक वर्ष 2022–2023

दि. 07 / 12 / 2022

## रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता रिपोर्ट

विवेकानंद कॉलेज के हिंदी विभाग की ओर से रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता दि. 07 / 12 / 2022 को संपन्न हुई। इस प्रतियोगिता में कविता, कहानी, वैचारिक निबंध, यात्रा वर्णन, निबंध, वैचारिक आलेख, चरित्रप्रधान लेख, जानकारीपरक आलेख आदि विधा प्रकार में लेखन किया गया। इस प्रतियोगिता में झरोखे से झाँकते–झाँकते, धरती माँ बोल रही है, उलझन, जिंदगी, मेरा भाई आदि कविताओं का लेखन शामिल है। इसके अलावा पेडों का महत्व, हिजडों की व्यथा, आनंददायी यात्रा, राष्ट्रभाषा हिंदी का महत्व, कुर्बानी की कथा–व्यथाः शंभुगाथा, सोशल मीडिया में फंसा युवा, इक्कीसवीं सदी में महिलाओं का स्थान, विश्व गुरु भारत, मेरे पापा, मेरी दुनिया, मेरा गाँव और बाढ प्रकोप, यादगार सफर, मेरा महाविद्यालय, जीवन एक अंतयात्रा, मेरा बीता कल, पेड न होते तो..., जीवन की यात्रा आदि गद्य विधा प्रकारों में छात्रों ने लेखन किया। प्रतिभागी छात्रों ने कविता के माध्यम से अपने भावों की अनुभूति प्रकट की। इसके अलावा गद्य साहित्य में अपने विचार और भावों की अभिव्यक्त प्रकट की। इस प्रतियोगिता से लेखन को अनुभूत किया गया। प्रतियोगिता में हिंदी विभाग के 21 छात्र शामिल हुए थे, जिनमें 8 छात्र और 13 छात्राएँ थीं। इस प्रतियोगिता में कु. अभिषेक मछले (बी. ए. भाग 2) को प्रथम क्रमांक, कु. ऋतुजा व्हरांबळे (बी. ए. भाग 2) को द्वितीय क्रमांक, कु. अर्शिल जमादार (बी. सी.ए. भाग 2) का तृतीय क्रमांक मिला। प्रोत्साहनपरक पुरस्कार साहिल खरारे (बी. ए. भाग 2) और कु. साक्षी दुबे ( बी. एस्सी. भाग 2) को मिला। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. आरिफ महात और डॉ. दीपक तुपे ने किया। कार्यक्रम के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर. आर. कुंभार सर का प्रोत्साहन मिला। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. दीपक तुपे और डॉ. आरिफ महात ने किया।

डॉ. दीपक तुपे

डॉ. आरिफ महात
विभागाध्यक्ष,
हिंदी विभाग, विवेकानंद कॉलेज,
कोल्हापूर.

Scanned by CamScanner

"Education for Knowledge, Science and Culture"
-Shiksahnmaharshi Dr. Bapuji Salunkhe

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(AUTONOMOUS)

**INTERNAL QUALITY ASSURANCE CELL**

**Academic Year 2021-22**

# Creative Writing Competition

1. **Name of Department** : **हिंदी (Hindi)**
2. **Name of Organized Activity** : **रचनात्मक / सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता**
3. **Date/ Duration** : 07/12/2022
4. **Aims and Objectives** : 1. छात्रों में रचनात्मक लेखन कौशल विकसित करना।
   2. साहित्य की विविध विधाओं से परिचित करना।
5. **No. of beneficiaries** : **Total = 22**

| | | |
|---|---|---|
| Teachers | Gender | 01 |
| Students | Male | 08 |
| | Female | 13 |

6. **Expenditure & funding agency**: --
7. **Brief description**: रचनात्मक लेखन एक कला है। रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता से छात्र विविध विधाओं की लेखन कला हो जाती है। इस प्रतियोगिता से छात्रों में वैचारिक एवं भावात्मक रुप लेखन कला सीख जाते हैं। रचनात्मक लेखन में न्याय, समता, भाईचारे जैसे मानवीय मूल्यों का प्रसार होता है। सा साथ ही समाज को दिशानिर्देश मिल जाता है। सबसे अहम बात यह कि छात्रों में लेखन कला विकसित हो जाती है। उन्हें एक रोजगार की प्राप्ति हो जाती है। रचनात्मक लेखन की भाषा और अभिव्यक्ति पद्धति पता चल जाती है।
8. **Outcomes** : 1. सृजनात्मक लेखन कला अवगत हुई।
   2. सृजनात्मक लेखन क्षेत्र के रोजगार अवगत हुए।
   3. सृजनात्मक लेखन की भाषा अवगत हुई।
9. **Photos** : सलग्न (Attached photos)
10. **Signatures of coordinator/ organizer** : **डॉ. दीपक तुपे/ डॉ. आरिफ महात**

Scanned by CamScanner

वर्षा जयवंत गायकवाड
बी.ए. भाग तीन

# इन्सानियत

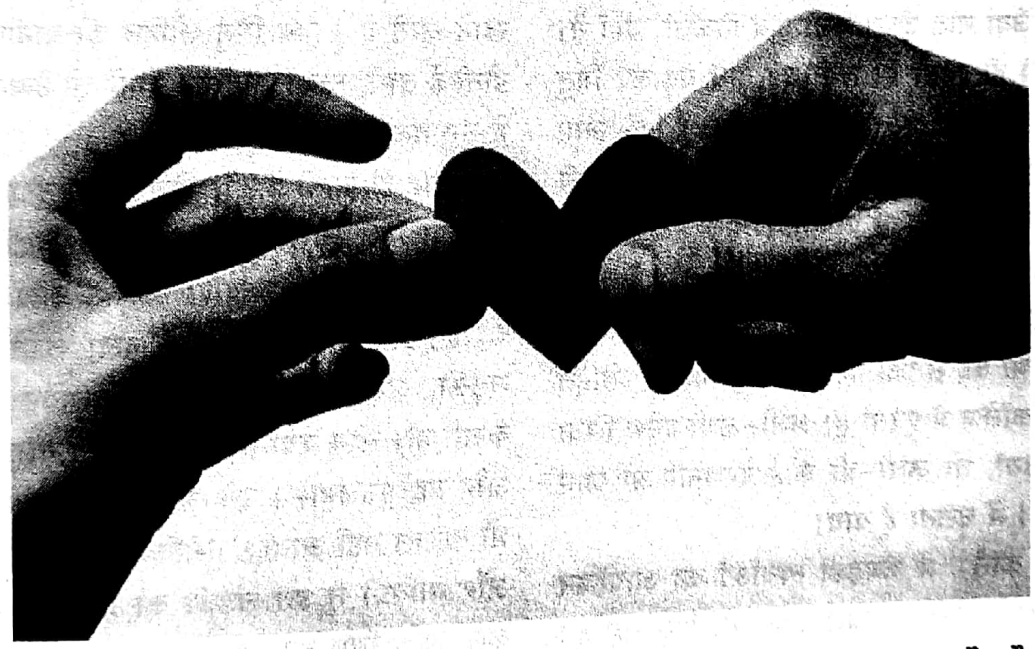

रात का सुंदर नजारा। आसमान तारों से सजा हुआ था। चाँद की रोशनी मितु के कमरे में बिलकुल एक फरिश्ते की तरह दिखाई दे रही थी। मितु भी सारी लाईट्स ऑफ करके चाँद की ओर देख रही थी, लेकिन टेन्शन से क्योंकि कल मितु का बारहवीं का रिजलट आनेवाला था। तभी उसके पिता जयशंकर पाटिल ने देखा मितु अब तक जाग रही हैं। वो अंदर आये और मितु से पूछा । मितु ने सबकुछ बता दिया। उसके पापा ने उसे समझाते हुए कहा मुझे पूरा विश्वास हैं मेरी बेटी सिर्फ परीक्षा उत्तीर्ण नहीं होगी बल्कि पहला नंबर निकालेंगी तभी उनकी बातें सुनकर माँ सावित्री आती हैं और वह भी मितु को समझाकर सोने के लिए भेजती हैं। सुबह रिज्लट आता हैं और मितु (राज्य) में अव्वल आती हैं। वह अपना रिजल्ट अपने पिता को दिखाती हैं। उसके पिता उसे गले लगाते हैं और कहते हैं कि ''जाओ और सभी गाँव को मिठाई दो'' हाँ ! वह ऐसा ही करेंगे क्योंकि गाँव के मुखिया; जो ठहरे।

मितु के परिवार में चार लोग रहते हैं। माता-पिता, मितु और उसके भाई अमित जो मितु से बड़ा हैं। उन दोनों में सबसे ज्यादा लाड़-प्यार मितु को ही मिला हैं। मितु एक सीधी-सादी लड़की हैं। होशियार और रूप से बहुत सुंदर। उनका परिवार हिंदू धर्मीय हैं।

एक महीने बाद मितु की छुट्टियाँ खत्म होने पर



Scanned by CamScanner

कॉलेज जाती है। उसके नए दोस्त भी बन जाते हैं। मितु घर जा रही थी। आते जाते समय उसे कुछ लड़के परेशान करने लगते हैं। मितु अपने पापा को बताना चाहती है। लेकिन उसे पता है कि पापा उन लड़कों को खूब मारेंगे और बिना मतलब का कॉलेज में बखेड़ा खड़ा हो जाएगा। इसीलिए वह अपने पापा को कुछ नहीं बताती और सबकुछ सहती हैं। एक दिन वह लड़के उसके नजदीक जाने लगते हैं और उसे खींचकर कॉलेज के पीछे ले जाते हैं। उसे ले जाते हुए कॉलेज का एक लड़का देखता है। मितु रो रही होती थी। लड़के उसे सताने के लिए उसके और नजदीक जा रहे थे तभी वह लड़का उनको मारने लगता है और कहता है ''सालों क्या लड़कियाँ रास्ते पे पड़ी हैं? तुम्हारी कोई माँ -बहन नहीं है घर में; जो इस लड़की को छेड़ रहे हो। आज छोड़ता हूँ तुम्हें, लेकिन आईंदा इस लड़की के आसपास भी दिखे तो यही जिंदा गाड़ दूँगा। चलो अब निकलो, यहाँ से। मितु उसे देखती ही रहती है। तभी वह हाथ बढ़ाकर मितु को उठाने के लिए मदद करता है और कहता है फिर आए ना तो तुम मुझे बताना। मैं उन कुत्तों की हड्डी- फसली एक करूंगा। चलो चलता हूँ अपना खयाल रखना तुम। तभी मितु आवाज देती है रुको...

कौन हो तुम? नाम क्या है तुम्हारा? क्या इसी कॉलेज में पढ़ते हो? तभी वह लड़का कहता है मैं शोहित। शोहित देसाई। मैं इसी कॉलेज में पढ़ता हूँ। अभी-अभी प्रवेश लिया है। अच्छा, बढ़ियाँ, तो कभी-भी कोई परेशानी आ जाए तो मुझे बताना। मैं चलता हूँ बाय!

दूसरे दिन कॉलेज में कबड्डी स्पर्धाओं का आयोजन होता है और उसमें शोहित अव्वल आता है। मितु यह सब देखकर बहुत खुश होती है और उसे लगता है कि उसे शोहित से दोस्ती करनी चाहिए, स्पर्धाएँ खत्म हो जाती हैं और शोहित के टीम को पुरस्कार दिया जाता हैं। शोहित अपनी जगह पर बैठ जाता है और मितु उसके पास आकर कहती है, अरे तुम तो कमाल के खिलाड़ी हो मुझे बहुत अच्छा लगा तुम्हें इनाम मिला। बधाई हो। बहुत बढ़ियाँ। 'थैंक्स डियर' उसका 'डियर' यह शब्द सुनकर तो मितु और खुश हो जाती है और कहती है, ठीक है शोहित मुझसे दोस्ती करोगे तो शोहित कहता, अरे क्यों नहीं? जरूर, आज से हम दोनों दोस्त हैं। उनके बीच बहुत गहरी दोस्ती हो जाती है। दोनों रोज मिलते हैं। रोहित को मितु से प्यार हो जाता है। कई दिन बितने के बाद मितु को भी रोहित अच्छा लगने लगता है कि आज चाहे जो भी हो जाए लेकिन में मितु को अपने दिल की बात बता ही दूँगा और वह मितु को प्यार की बात बता देता है। प्यार की बात सुनकर मितु को तो अपने कानों पर विश्वास ही नहीं होता और मितु शोहित को 'हाँ' बोल देती हैं। अब दोनों मोहब्बत के रिश्ते में बंध जाते हैं।

एक दिन ऐसा भी आता है जब दोनों एक-दूसरे से बहुत गहरा और सच्चा प्यार करने लगते हैं। इतना सच्चा प्यार की अपने प्यार की खातिर किसी की जान भी ले ले और अपनी जान भी दे दे। मितु शोहित से कहती है चलो शोहित हम अपने रिश्ते की पार्टी मनाते हैं। शोहित तुम्हें पानीपुरी बहुत पसंद है ना। उस पानीपुरी वाले के पास जोत हैं। वह बहुत अच्छी पानीपुरी बनाता है। दोनों पानीपुरी खाने जाते हैं । जब मितु शोहित को पानीपुरी खिला रही होती है तभी उसका भाई उन दोनों को देखता हैं। वह गुस्से में घर चला जाता है।

शाम हो जाती है और मितु घर आती हैं। आते ही मितु के पापा मितु को मारते हैं। उन्हें कोई नहीं रोकता। मितु चिल्लाकर कहती है, 'पापा रुको... आप मुझे क्यों मार रहे हैं। मैंने क्या किया है?' पापा कहते हैं, 'अरे मुर्ख लड़की, जरा शर्म कर तू एक मुसलमान लड़के से प्यार करती हो। लोग क्या सोचेंगे उन्हें पता चला तो हम हिंदू हैं और वह मुसलमान। उसे अपनाते हुए हमारे बारें में जरा भी खयाल नहीं आया?' 'लेकिन पापा मैं...।' 'तू चुप कर और सावित्री तू इस लड़की को मेरी नजरों से दूर रख। कल इसके लिए एक अच्छा-सा लड़का देखेंगे और परसो इसकी शादी करेंगे और हाँ इसका फोन मुझे दे और अमित तू उस मुसलमान को उसकी आलाद अच्छे से याद दिलाना. साला मुसलमान कहीं का।'

माँ मोबाईल छीनकर मितु को उसके रूम में बंद कर देती हैं। मितु बहुत रोती है उसे कुछ भी समझ में नहीं आता। वह फूट-फूटकर रोती है क्योंकि उसे पता होता है कि उसका भाई शोहित को बुरी तरह से मारेगा और ऐसा ही होता है शोहित को मारकर मितु का भाई अमित, शोहित को धमकाता है। अगर इसके बाद तुमने मेरी बहन की ओर देखा ना तो तेरी जान लूँगा। आया समझ में? और अपने साथियों से कहता है, 'चलो रे! अब बहुत हुआ। शोहित



Scanned by CamScanner

भी पूरी तरह से टूट जाता हैं क्योंकि वह भी मितु से बहुत प्यार करता हैं।

मितु की शादी तय हो जाती हैं और लड़के वाले दहेज के रूप में एक लाख रुपये मांगते हैं। दूसरे दिन अमित पैंसे लेकर मितु के पति के घर जाने लगता तभी रास्ते में उसके पापा के कुछ विरोधी आकर अमित पर हमला करते हैं और पैंसे की बैंग लेकर भागने ही वाले थे तभी शोहित और दोस्त उसे पकडते हैं। उनको मारकर पैंसे की बैंग सही सलामत मितु के पापा के पास पहुँचाते हैं और अमित को शोहित अस्पताल लेकर जाता हैं। दो दिनों के बाद अमित ठीक होकर घर जाता हैं और आते ही कहता हैं ''पापा मुझे उस शोहित से मिलना हैं अभी के अभी'' अमित की जिद करने पर उसक पिता शोहित को बुला लेते हैं। शोहित मितु के घर पहुँच जाता हैं। शोहित आते ही अमित उसे गले लगाता हैं और कहता हैं, 'थैंक यू सो मच', यार तू नहीं होता तो पता नहीं मेरा क्या होता। अमित मैंने तो अपना फर्ज निभाया तभी उनकी बातें सुनकर मितु आती हैं। शोहित तुमने इसे क्यों बचाया, यह तो हिंदू हैं ना... शोहित कहता हैं तो क्या हुआ वह सबसे पहले एक इन्सान हैं और, और मैंने भी इन्सानियत के नाते यह सब किया। मितु कहती हैं देखा पापा शोहित चाहता तो भाई से अपना बदला भी ले सकता था और आप यह जाति-पाँति की राजनीति करते हैं। यही बात शोहित भी करता तो भैय्या आज यहाँ नहीं होता। आपको जो लगता वो लगता हैं, लेकिन शोहित ने आज यह दिखा दिया कि मानवता से बड़ी कोई जाति नहीं होती और इंन्सानियत से बड़ा कोई धर्म नहीं होता तभी उसके पापा कहते मुझे माफ कर दो बच्चों। खास करके शोहित, तुमने आज मेरी आँखें खोल दी। मैं यह ऐलान करता हूँ कि मैं मितु का पापा इस गाँव का मुखिया यानी जयशंकर पाटिल अपनी मितु की शादी शोहित के साथ ही करूँगा। चाहे वह मुसलमान क्यों न हों क्योंकि आज मुझे यह एहसास हुआ हैं कि कोई जाति उँच-नीच नहीं होती और इंसानियत से बड़ा कोई धर्म नहीं होता।

◆◆◆

# मेरी सहेली, मेरी बहन

*मेरी बहन, मेरी अच्छी सहेली है।*
*हर उलझन को सुलझानेवाली*
*मेरी पहेली है।*

*वे मुशक है तो मैं उसकी पूछँ हूँ।*
*वह आगे है तो मैं उसकी परछाई हूँ।*

*कभी उसका लाल टमाटर जैसा गुस्सा*
*करना*
*तो कभी मीठे लड्डू जैसा प्यार देना।*

*वह मेरी दूसरी माँ है।*
*अच्छे-बुरे वक्त में हमेशा साथ देती है।*

*वह प्रोत्साहन राशि का है खजाना,*
*हर परशानी में हल निकालना*
*उसका स्वभाव।*

*छोटे बच्चे जैसे झगड़ना हमारी नीति है।*
*कुछ सेकंड में सबकुछ भूल कर*
*बात करना हमारा रिश्ता है।*

*हमारा रिश्ता मानो बारिश और*
*छाते के समान है।*
*हम दोनों एक हो तो सब काम आसान है।*

*हमारा नाता है कुछ अलग किस्म का*
*वह सिर्फ मेरी अच्छी बहन नहीं*
*अच्छी सहेली है...*
*अच्छी सहेली है।*

पूजा ज्ञानदेव पोपले
बी.ए. भाग एक



Scanned by CamScanner

**अर्पिता पाटिल**
बी. ए. भाग तीन

# अनाथों की माँ- सिंधूताई सपकाळ

सिंधूताई का जन्म 14 नवम्बर, 1948 को महाराष्ट्र के वर्धा जिले के पिंपरी गाँव में हुआ। उनके पिताजी का नाम अभिमान साठे हैं जो कि एक चरवाह (जानवर चरानेवाले) थे। लैंगिक भेदभाव के चलते उन्हें घर में कपडे का फाटा टुकड माँ के विरोध और आर्थिक सीमाओं के रहते उनकी शिक्षा में बाधाएँ आती रही और उनकी शिक्षा चौथी कक्षा तक ही हो पाई।

10 वर्ष की आयु में ही सिंधूताई का विवाह 30 वर्षीय 'श्रीहरी सपकाळ' से कर दिया गया। सिंधूताई ने जिलाधीश से गाँववालों को उनकी मजदूरी के पैसे ना देनेवाले गाँव के मुखिया तक की शिकायत की थी। अपने इस अपमान का बदला लेने के लिए मुखिया ने श्रीहरी और सिंधूताई को घर से बाहर निकालने के लिए मजबूर किया। उनके पति ने उन पर अवैध यौन संबंध का आरोप लगाकर उन्हें पीटकर घर से निकाल दिया। इस समय वह 9 महीने की गर्भवती थी। उसी रात उन्होंने तबेले (गाय-भैंसों के रहने की जगह) में अधचिंतन अवस्था में एक बेटी को जन्म दिया। जब वह अपनी माँ के घर आई तो उनकी माँ ने उन्हें घर में रखने से इंकार कर दिया। उनके पिताजी का देहान्त हुआ था वरना वह अवश्य अपनी बेटी को सहारा देती। सिंधूताई



Scanned by CamScanner

अपनी बेटी के साथ रेल स्टेशन पर रहने लगी। पेट भरने के लिए भीख माँगती और रात में खुद को और बेटी को सुरक्षित रखने हेतु शमशान में रहती। उनके इस संघर्षमय काल में उन्होंने यह अनुभव किया देश में कितने सारे अनाथ बच्चे हैं जिनको एक माँ की जरूरत है। तब उन्होंने निर्णय लिया कि जो भी अनाथ उनके पास आएगा वे उनकी माँ बनेगी। उन्होंने अपनी खुद की बेटी को दगडुशेठ हलवाई, पुणे, महाराष्ट्र ट्रस्ट में गोद दे दिया ताकि वे सारे अनाथ बच्चों की माँ बन सके। सिंधूताई ने अपना पूरा जीवन अनाथ बच्चों के लिए समर्पित किया। इसीलिए उन्हें 'माई' (माँ) कहा जाता है। उन्होंने 1050 अनाथ बच्चों को गोद लिया है। उनके परिवार में आज 207 दामाद और 36 बहुएँ हैं। 1000 से भी ज्यादा पोते-पोतियाँ हैं। उनकी अपनी बेटी वकील है और उन्होंने गोद लिए बहुत सारे बच्चे आज डॉक्टर, अभियंता तथा वकील हैं और उनमें से बहुत सारे खुद का अनाथालय भी चलाते हैं।

सिंधूताई को कुल 273 राष्ट्रीय और आंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें 'अहिल्याबाई होलकर' पुरस्कार है जो स्त्रियों और बच्चों के लिए काम करनेवाले समाजसेवियों को महाराष्ट्र सरकार द्वारा दिया जाता है। इस धन को वे अनाथालय के लिए इस्तेमाल करती हैं। उनके अनाथालय पुणे, वर्धा, सासवड (महाराष्ट्र) में स्थित हैं। 2010 साल में सिंधूताई सपकाळ को लंदन फिल्म महोत्सव के लिए चुना गया था।

सिंधूताई के पति जब 80 साल के हो गए तब वे उनके साथ रहने के लिए आए। सिंधूताई ने अपने पति को एक बेटे के रूप में स्वीकार किया ये कहते हुए कि अब वो सिर्फ एक माँ है। आज वे बड़े गर्व के साथ बताती है कि वो (उनका पति) उनका सबसे बड़ा बेटा है।

सिंधूताई कविता भी लिखती है और उनकी कविताओं में जीवन का पूरा सार होता है। वे अपनी माँ के प्रति आभार प्रकट करती हुई कहती है कि अगर उनकी माँ ने उनको पति के घर से निकालने के बाद घर में सहारा दिया होता तो आज वो इतने सारे बच्चों की माँ नहीं बन पाती।

सिंधूताई ने अन्य समकक्ष संस्था की स्थापना की; जो निम्नलिखित है-

* बाल निकेतन हड़पसर, पुणे
* सावित्रीबाई फुले लड़कियों का छात्रावास, चिखलदारा
* अभिमान बाल भवन, वर्धा
* गोपिका गाईरक्षण केंद्र, वर्धा
* ममता बाल सदन, सासवड़
* सप्तसिंधू महिला आधार बालसंगोपन एवं शिक्षा संस्था, पुणे.

सिंधूताई ने अपनी संस्था के प्रसार और कार्य के लिए निधि संकलन करने हेतु से प्रदेश दौरे किए। अंतरराष्ट्रीय मंच पर उन्होंने अपनी वाणी और काव्य से समाज को प्रभावित किया है। विदेशी अनुदान आसानी से प्राप्त हो इसीलिए उन्होंने मदर ग्लोबल फाउंडेशन संस्था की स्थापना की।

- पुरस्कार :

* अहिल्याबाई होलकर पुरस्कार (महाराष्ट्र राज्य द्वारा)
* राष्ट्रीय पुरस्कार 'आयकॉनिक मदर'
* सह्याद्री हीरकणी पुरस्कार
* राजाई पुरस्कार
* शिवलीला महिला गौरव पुरस्कार
* दत्तक माता पुरस्कार
* रियल हीरोज पुरस्कार (रिलायन्स द्वारा)

गौरव पुरस्कार सिंधूताई को लगभग 750 राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय गौरव पुरस्कार मिले हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

महाराष्ट्र शासन का डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर समाज भूषण पुरस्कार (2012)

* पुणे का अभियांत्रिका कॉलेज का कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग पुरस्कार (2012)
* महाराष्ट्र शासन का अहिल्याबाई होलकर पुरस्कार (2010)
* मूर्तिमंत माँ के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार (2013)
* आई टी प्रॉकिट ऑर्गनाइनजेशन दत्तक माता पुरस्कार (1996)
* सोलापुर का डॉ. निर्मलकुमार फड़कुले स्मृति पुरस्कार
* राजाई पुरस्कार
* शिवलीला महिला गौरव पुरस्कार
* श्रीरामपुर-अहमदनगर जिले में सुनिता कलानिकेतन न्यासा की ओर से स्व. सुनिता त्र्यंबक कुलकर्णी स्मृति में दिया जानेवाला सामाजिक सहयोगी पुरस्कार (1992)
* आईबीएन और रियायन्स फाउंडेशन ने दिया रियल हीरो पुरस्कार (2012)
* 2008- दैनिक लोकसत्ता का सह्याद्री की हीरकणी पुरस्कार

◆◆◆



Scanned by CamScanner

# हिंदी की आत्मकथा

मैं हिंदी बोल रही हूँ।
मेरा जन्म भारत देश में हुआ था।
मैं एक भाषा के नाम से जानी जाती हूँ।
मैं तो युगों-युगों से लोगों की
जुबान पे बसती आई हूँ।
लोगों की भावनाओं में रंग भरने आई हूँ।

फिर ऐसा क्या हुआ कि मेरी हालात
सूखे पत्ते जैसी हुई।
लोग मुझ पर क्यों हँसने लगे?
ऐसा क्या कर दिया मैंने, क्या गलती है मेरी?
कि लोग मुझे नजरांदाज करने लगे।

मैं इतनी शुद्ध और परिष्कृत होने पर भी,
मैं आज गँवार क्यों हूँ?
मैं तो लोगों के विचारों को रास्ता दिखाती हूँ,
एक नई दिशा बताने वाली घुड़सवार हूँ।
मैं कोई गँवार नहीं बल्कि मैं तो,
ज्ञान की भंडार हूँ।

मेरा तो सुनहरा इतिहास रहा है।
कितने पंडितों ने मुझसे ज्ञान लिया है।
फिर भी मैं हताश हूँ, क्यों मैं निराश हूँ?
मैं ताकत हुआ करती थी, उन शूर वीरों की,
तलवार की, धार भी मुझ से दूर थी।
आज मुझे उसी धार ने काट कर रखा,
आज मुझे जिंदा लाश बना दिया।

जो भूल चुके है मुझे, वो गौर करें फिर से,
मैं आज भी वही हिंदी हूँ।
भारत के शान की
पहचान हूँ।
मैं हिंदी हूँ।
जय हिंद, जय भारत।

चेतना रानगी
बी. कॉम. भाग एक



Scanned by CamScanner

करिना माळाप्पा इंडिकर
बी.ए. भाग दोन

# कानून की सच्ची जानकार- कपिला हिंगोरानी

आपने पीआईएल के बारे में सुना हैं? नहीं सुना हैं तो फिल्म 'जॉली एल.एल.बी.' याद कीजिए। इस फिल्म में अरशद वारशी ने जगदीश त्यागी नाम के वकील का किरदार निभाया हैं। याद कीजिए कि कैसे जज उसकी खराब इंग्लिश का मजाक उड़ा रहा था। जज ने भरी कोर्ट में जगदीश के लिए कहा था, अपील की एप्पल लिख रहा हैं, जिस कागज पर गलती के लिए जगदीश का मज़ाक बन रहा था, वो पीआईएल का आवेदन ही था। माने पब्लिक इंटरेस्ट लिटिगेशन याने जनहित याचिका। आज हम उस औरत की कहानी जानेंगे जिसने भारत में पहली पीआईएल दायर की थी जिनका नाम हैं कपिला हिंगोरानी।

केनिया की राजधानी नागरोबा में एक लड़की जन्म हुआ। उस लड़की के आदर्श थे अहिंसा के चैंम्पियन महात्मा गांधी। जैसे कि हम जानते हैं, गांधीजी भी वकील थे। अपनी कम्यूनिटी से यूके जाने वाली वो पहिली लड़की थी। यह 1947 की बात हैं। इसी साल भारत को महात्मा गांधी के नेतृत्व में आजादी मिली थी।

पुष्पा कपिला हिंगोरानी एक भारतीय वकील थी जिन्हें



Scanned by CamScanner

जनहित याचिका की जननी (पीआईएल) के रूप में माना जाता है। तत्कालीन प्रचलित कानूनों के अनुसार याचिका केवल पीड़ित या रिश्तेदार द्वारा दायर की जा सकती थी। कपिला और उनके पति निर्मल हिंगोरानी विहार में विचाराधीन कैदियों का प्रतिनिधित्व करना चाहते थे।

उस लड़की का नाम था पुष्पा कपिला हिंगोरानी। ऐसी कई बाते हैं, जिनमें कपिला पहली रही हैं।

माना जाता है कि वे कार्डिक लॉ स्कूल वेल्स से स्नातक होने वाली पहिली महिला थी। वह 1961 में भारत की सुप्रीम कोर्ट में प्रॅक्टिस शुरू करने वाली पहली चार महिलाओं में से एक थी।

कपिला ने भारत में पहली पीआईएल दायर की और उस पर सुप्रीम कोर्ट में दलील भी दी।

जब ये पहली बार कार्डिफ गरे थी, तब बच्चे के एक झुंड ने पीछे से गाना शुरू कर दिया था, 'देखो दुल्हन चली आ रही हैं। उनमें से ज्यादातर लोगों ने किसी महिला को साड़ी पहने नहीं देखा था। इसी जगह पर ही एबरडेयर हॉल में एक कमरा हैं, जहाँ लगी एक तख्ती पर उन्हें मानव अधिकारों की रक्षक बताया गया हैं।

पहली पीआईएल में ऐसा क्या खास था। भारत के लॉ स्टूडेंट ने इसके बारे में पढ़ा होगा। ये 'हुसैनारा खातून नाम का बिहार गृह सचिव का केस था। वो केस जिसकी वजह से 40 हजार अंडरट्रायल कैदियों की तुरंत रिहाई हुई। भारतीय संविधान के आर्टिकल 21 में 'स्पीडी ट्रायल' मौलिक अधिकार हैं। माने आपका केस कोर्ट में फूर्ति से चलना चाहिए, चाहे आपकी गलती कितनी ही बड़ी हो मगर आप सोच रहे हैं कि आखिर कैदियों के लिए इतनी मेहनत क्यों की गई। वह इसलिए कि इनमें से कई लोग खुद किसी अपराध के विटनेस थे। इनमें ये सोचकर कैद में रखा गया था कि जब सुनबाई की तारीख आए, तो आसानी से अदालत में पेश कर दिया जाए।

ऐतिहासिक मामले 1979 में हुसैनारा खातुन मासले के रूप में जाना जाने लगा। हुसैनारा छह महिला कैदियों में से एक थी। इसने उन्हें मदर ऑफ पीआईएल का खिताब दिलाया। इस मामले ने भारतीय कानूनी व्यवस्था में एक क्रांति को जन्म दिया। उन्होंने भागलपुर ब्लाईडिंग्स का भी खुलासा किया जिसके परिणाम स्वरूप सुप्रीम कोर्ट ने निर्देश दिया कि 33 अपराधियों को प्रताड़ित करने वाले पुलिसकर्मियों पर मुकदमा चलाया जाए और पीड़ितों की चिकित्सा सहायता और जीवन भर के लिए पेंशन दी जाए। वह कार्डिफ लॉ स्कूल में पढ़ने वाली पहली भारतीय महिला हैं। एबरडेयर हॉल में उनके सम्मान में एक पट्टिका लगाई गई हैं। बिहार के एक वकील द्वारा अत्याचारों के बारे में लिखे जाने के बाद कपिला ने एक याचिका भी दायर की, जिसमें पुलिस ने सुई और तेजाब का इस्तेमाल कर 33 संदिग्ध अपराधियों को अंधा कर दिया था। आखिरकार सुप्रीम कोर्ट ने पीड़िता को चिकित्सा सहायता मुआवजा और आजीवन पेंशन देने का आदेश दिया।

2 मार्च, 1979 की सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन ने हिंगोरानी के काम की तारीफ में रेजोल्यूशन पारित किया।

तब से लेकर अपने दुनिया छोड़ने तक यानी २० दिसंबर, 2013 तक उन्होंने और उनके पति निर्मल हिंगोरानी ने कुछ ऐसे 100 केस लिए होगें जिनके लिए काई ली गई। इनमें से कुछ प्रमुख केस ये हैं।

1) एक बार कपिलाजी का ध्यान 4 हेज पताउना के 11 मामलों की तरफ गया, जो अलग-अलग लेबल पर धुल खा रहे थे। कपिला ने दर्ज किया जिसके नतीजे में स्पेशल पुलिस सेल बनी, जो विशेष रूप से महिलाओं के खिलाफ हो रहे अपराधों के साथ दिल करते हैं।

2) कर्नाटक में देवदासी प्रथा थी। देवदासी वो महिलाएँ होती थी, जो अपना पूरा जीवन मंदिरों में देवी-देवताओं की पूजा करने में लगा देती थी। कई बार मंदिर के पुजारी उनका शोषण करते थे।

सन 1983 ई. में इस पर रोक लगी। इसके पीछे भी कपिला का हाथ था।

3) कपिला में भारत में फैमिली कोर्ट की स्थापना करने में भी प्रमुख भूमिका निभाई हैं।

कपिला हिंगोरानी ऐसी पहली महिला वकील भी बन गई हैं, जिनकी तस्वीर सुप्रीम कोर्ट की लाइब्रेरी में लगाई गई हैं। 75 साल इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ हैं। 4 दिसंबर, 2017 को सुप्रीम कोर्ट के चीफ जास्टीस दीपक मिश्रा ने इस तस्वीर का अनावरण किया।

इस तस्वीर का अनावरण करते हुए जस्टिस मिश्री ने कहा, इस पल का बड़ी देर से इंतजार था।

◆◆◆



Scanned by CamScanner

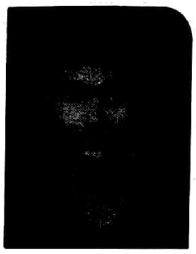

श्रीनिवास सुनील काटकर
बी.बी.ए. भाग एक

# गरीब की राखी

धागे कई प्रकार के होते हैं, कुछ धागे कच्चे होते हैं और कुछ धागे पक्के होते हैं।

हुपरी नाम का एक गाँव था। हुपरी गाँव में आदर्श नामक गरीब रहता था। आदर्श के कपड़ों से गरीबी झलक रही थी, लेकिन उसके चेहरे की खुशी पर गरीबी पर हावी थी। क्यों न हो आदर्श खुश था क्योंकि आज राखी का दिन था।

वह जल्दी उठकर नहा-धोकर पूजा करके तैयार हो गया और दरवाजे के पास कुर्सी लगाकर बैठ गया- आशा के इंतजार में।

आशा उसकी इकलौती बहन थी, जिसकी शादी इसी साल संम्पन्न परिवार में हुई थी और शादी के बाद उसका पहला रक्षाबंधन था।

गरीब भाई आदर्श ने अपनी हैसियत से बढ़कर तैयारी की थी- अपनी बहन आशा जी के स्वागत की। आदर्श भूखा-प्यासा दरवाजे के पास ही बैठा रहा और इंतजार करते-करते सुबह से शाम हो गई।

आदर्श नाम की तरह था। आदर्श की बीवी आदर्श ने उसे कई बार भोजन करने का आग्रह किया, लेकिन एक भाई अपनी बहन से राखी बंधवाकर ही कुछ खाने-पीने का नियम कैसे तोड़ता?

इन्तजार करते-करते सूरज भी थक कर डूब गया। लेकिन आदर्श की निगाहें अब भी दरवाजे पर टिकी थी। मन ही मन आदर्श गाता जा रहा था-

फूलों का, तारों का, सबका कहना है,
एक हजारों में, मेरी बहना है,
सारी उमर हमें, संग रहना है,
फूलों का, तारों का, सबका कहना है।

फिर आदर्श की बीवी उसे भोजन करने का आग्रह करती हैं। फिर भी वह कुर्सी पर बैठा रहता है आशा के इंतजार में।

आदर्श की आँखों के सामने बीस साल पूर्व की घटना याद आती है।

आदर्श का एक संपन्न परिवार था। आदर्श के पिताजी शहर के प्रसिद्ध डॉक्टर थे। उनका नाम था- डॉ. अशोक; जो हुपरी में मशहूर डॉक्टर थे। उनकी माताजी पार्वती एक स्कूल में पढ़ाती थी। वह सुशील थी। गाँव में उनके परिवार की चर्चा होती थी।

जब राखी का दिन आता था तब आशा माताजी के साथ जाकर बाजार से बड़ी से बड़ी राखी लेकर आती थी और सुबह होते ही नाट कपड़ों में सजधजकर भैया आदर्श को बड़ी से बड़ी राखी बाँधती थी।

आदर्श भी अपने इस छोटी बहना के लिए कोई बड़ा-सा उपहार लाता था तो आशा का खुशी का ठीकाना न रहता था। पिता का का सपना था कि आदर्श बड़ा होकर डॉक्टर बने; पर



Scanned by CamScanner

भगवान किस्मत में क्या-क्या लिख देता हैं। वक्त आने पर जिंदगी में सबकुछ बदल जाता है।

एक दिन डॉ. अशोक अपनी पत्नी पार्वती और बेटा आदर्श, बेटी आशा के साथ रिश्तेदार की शादी में जा रहे थे। इतने में उनके कार की बड़ी दुर्घटना हुई।

उस कार दुर्घटना में आदर्श के पिताजी - डॉ. अशोक घटनास्थल पर ही मर गए और माताजी वह हाद-सा सह नहीं पाई। वह पागल हो गई। छोटी बहन आशा भी घायल हुई थी और आदर्श के शरीर को खरोच आई थी।

सबकुछ बरबाद हो गया। माँ हमेशा बीमार रहती थी। परिवार के खर्चे के लिए आदर्श ने पढ़ाई छोड़ दी थी। माँ के औषधों का खर्च, आशा के पढ़ाई का खर्चा इसलिए आदर्श होटल में दिन-रात काम करता था। एक दिन माँ भी गुजर जाती हैं।

आदर्श की इस दुनिया में सिर्फ आशा ही रह जाती हैं। वह सुशील, पढ़ाई में होशियार थी। वह तय करता हैं कि मैं दिन-रात काम करूंगा, मगर आशा को डॉक्टर बनाऊँगा और इस साल आशा डॉक्टर बन जाती हैं और उसकी शादी भी बड़े संपन्न परिवार में करा देता हैं। रक्षाबंधन के दिन वह सोचता हैं कि आशा राखी बाँधने के लिए अभी आ ही जाएगी।

तभी एक आलिशान गाड़ी घर के बाहर आकर रुकी। आदर्श आतुरता से आशा को लेने आगे बढ़ा तभी एक लड़की गाड़ी से उतरी और सोने की चमचमाती थाली में राखी लेकर आदर्श की ओर बढ़कर बोली-

"आशा मेमसाब ने आपके लिए यह राखी भिजवायी हैं।"

आज उनके यहाँ पार्टी हैं जिसमें बड़े-बड़े लोग आएँगे और मेमसाब उनके स्वागत की तैयारी में व्यस्त हैं।

आदर्श को आज से पहले कभी अपनी गरीबी का इतना एहसास नहीं हुआ जितना की आज हुआ था।

गरीब भाई अपनी कलाई नौकरानी की तरफ बढ़ाकर बोला, "तुम ही मुझे राखी बाँध दो।" और जो आदर्श ने कड़ी मेहनत से पैसे कमाकर साड़ी खरीदी थी वह शगुन के तौर पर नौकरानी की तरफ बढ़ा दी। जो उसने आशा लिए बड़े अरमानों से खरीदी थी। आदर्श ने उस राखी को अपने जीवन की अविस्मरणीय घटना माना।

◆◆◆

# हिंदी की आत्मकथा

*मैं हिंदी बोल रही हूँ।*
*मेरा जन्म भारत देश में हुआ था।*
*मैं एक भाषा के नाम से जानी जाती हूँ।*
*मैं तो युगों-युगों से लोगों की*
*जुबान पे बसती आई हूँ।*
*लोगों की भावनाओं में रंग भरने आई हूँ।*

*फिर ऐसा क्या हुआ कि मेरी हालात*
*सूखे पत्ते जैसी हुई।*
*लोग मुझ पर क्यों हँसने लगे?*
*ऐसा क्या कर दिया मैंने, क्या गलती है मेरी?*
*कि लोग मुझे नजरांदाज करने लगे।*

*मैं इतनी शुद्ध और परिष्कृत होने पर भी,*
*मैं आज गँवार क्यों हूँ?*
*मैं तो लोगों के विचारों को रास्ता दिखाती हूँ,*
*एक नई दिशा बताने वाली घुड़सवार हूँ।*
*मैं कोई गँवार नहीं बल्कि मैं तो,*
*ज्ञान की भंडार हूँ।*

*मेरा तो सुनहरा इतिहास रहा है।*
*कितने पंडितों ने मुझसे ज्ञान लिया है।*
*फिर भी मैं हाताश हूँ, क्यों मैं निराश हूँ?*
*मैं ताकत हुआ करती थी, उन शूर वीरों की,*
*तलवार की, धार भी मुझ से दूर थी।*
*आज मुझे उसी धार ने काट कर रखा,*
*आज मुझे जिंदा लाश बना दिया।*

*जो भूल चुके है मुझे, वो गौर करें फिर से,*
*मैं आज भी वही हिंदी हूँ।*
*भारत के शान की*
*पहचान हूँ।*
*मैं हिंदी हूँ।*
*जय हिंद, जय भारत।*

चेतना रानगी
बी. कॉम. भाग एक



Scanned by CamScanner